उमाकान्त

उमाकान्त मैथिलीक यशस्वी रचनाकार छथि। हिनक जन्म मधुबनी जिलाक ढंगा (हरिपुर) गाममे 17 जनवरी, 1945 मे भेलनि। मैथिलीमे एम. ए. कयलाक बाद एम. एल. एस. एम. कालेजमे प्राध्यापक भेलाह। सीताक चरित पर पी-एच. डी. कयलनि। ओही कालेजमे मैथिलीक विभागाध्यक्ष पदसँ सेवानिवृत्त भऽ आब पूर्णत: साहित्य-रचनामे दत्तचित्त छथि।

उमाकान्त मैथिली साहित्यमे हास्य -व्यंग्यक रचनाकारक रूपमे प्रशस्त भेलाह। प्रो. हरि मोहन झाक स्मरण करबैत हिनक हास्य -व्यंग्य पुस्तक 'बाबाक विजया' एहि विधाक महत्वपूर्ण कृति अछि। हिनक कथा-संग्रह 'यर्थाथ' तथा नाटक 'सीता' बेस चर्चित भेल अछि। 'अर्पण' नामक वार्षिक स्मारिकाक बीस वर्ष धरि ई सम्पादन कयने छथि। अन्य स्मारिका तथा पत्रिकाक सेहो ई सम्पादन कयलनि अछि। हिनक निबन्ध-संग्रह 'अपन बात' समाचार -पत्रमे प्रकाशित स्तम्भ-लेखनक पुस्तकाकार रूप थिक।

प्रस्तुत कथा -'आरम्भ' पत्रिकासँ लेल गेल अछि। ई एकटा टेम्पो चालकक कथा अछि। ओकर असली नाम जे होइक, लोक ओकरा 'क्रैक' कहैक। ओ अपनहुँ एहि नामकँ स्वीकारि लेने छल। आचरणसँ सेहो 'क्रैक' नामकँ सार्थक करैत रहैत छल। एक दिनक घटना अछि जे एकटा नवयुवक ओकर टेम्पो पर आबि बैसि गेलैक। कनेक कालक बाद एकटा महिला सेहो बैसलीह। ओ युवा व्यक्ति अभद्र व्यवहार करय लागल। महिला असहज भऽ गेलीह। टेम्पो चालक क्रैक ओहि नवयुवककँ मना केल़कैक, नहि मानला पर ओकरा संग कठोर व्यवहार कयलक। अपन जान पर खेलि कऽ ओहि युवा छौंड़ाकँ अन्तत: टेम्पोसँ उतारिये कऽ छोड़लक।

नैतिकता आ कर्त्तव्यबोध मनुष्यक विशेषता थिक। ककरो व्यवसायसँ ओकर व्यक्तित्वकँ नापल नहि जा सकैत अछि। ई कथा व्यक्तिक मानवीय-चेतनाक एकटा ठोस उदाहरण प्रस्तुत करैत अछि।

क्रैक

साफे बताह अछि। हरदम दाँत चियारने बतिसी देखबैत रहैए, हँ-हँ-हँ करैत रहैए। झुमैत गीत गबैत चलबैत रहैए टेम्पो। तेहन-तेहन अकट्ठ बात करैत रहैए पसिंजर सभक संग जे सभकेँ हँसा दैए। अनेरो दोसर टेम्पो ड्राइभरकेँ चलितेमे उकठपना क' दैए आ हँस' लगैए, हँसोड़ ड्राइभर तँ हँसि दैए किन्तु पिताह प्रवृत्तिक ड्राइभर तामसे गारि पढ़' लगैत छै। बेसी टेम्पोबला एकरा 'क्रैक' कहैत छै। आब एकर नामे क्रैक भऽ गेल छै। क्रैक तँ अछि मुदा कोनो बातक आमेख-इरखा नै।

टेम्पोचालक अछि, नाम नै बुझल अछि। मानि लिय' जे ओकर नाम क्रैक भेल। सभ जखन क्रैक कहि सम्बोधित करैत छै तँ हमरा-अहाँकेँ क्रैक कहबामे कोन हर्ज?

हमरा प्रसन्नता होइए ओकर टेम्पोपर चढ़लासँ। डेरा आ कालेजक दूरी तीन किलोमीटरसँ उपरे हैत, कम नहि । नितो आबा-जाहीक सहारा वैह अछिं छुट्टीयो दिन कऽ जँ मैथिलीक कोनो बैसार की कवि सम्मेलन अथवा साहित्यिक गोष्ठी भेल, होइए बेसी दरभंगेमे तँ से जेबाक भेल तँ टेम्पो शरणमक् अतिरिक्त दोसर चारा नहि। रिक्शासँ जैब से साधन्स आर्थिक दृष्टिएँ अछि नहि। तखन तँ टेम्पोए सभसँ पैघ साधन। कालेज जेबा-अएबाक क्रममे अधिक काल एक ने एक पीठ क्रैक पकड़ा जाइते अछि। हमरा ओ बड़ नीक लगैए। नीक लगबाक कारण अछि जे ओ निर्विकार -निश्छल अछि। आम पसिन्जर संग ओकर व्यवहार देखि लगैए जेना ओकरा हृदयमे कतौ खोँच-खाँच नहि छै। हमरा सभ जकाँ बहत्तरि हाथक अँतरी नै छै। छै मे छै की त' हरदम बत्तीसी बेपर्द रहैत छै। दुनू ठोर दुनू कात कोसी नहरिक बान्ह जकाँ हँसीक धाराके समेटने। मुहँक तेहेन आकृति छै जे देखिते ठोरपर मुस्की छिड़िया जायत। टेम्पो चलबैत गर्दभ स्वरमे जैह फुरा गेलै सैह गबैत मस्तीमे चलैत रहैए। जहाँ पसिन्जर देखलक, रुकल- आउ 'शर', आउ 'शर' ! कहि क' गाड़ीपर चढ़ा लेलक, विदा भ' गेल। एकटा और खूबी छै ओकरामे। ओ समदर्शी जकाँ मौगी-पुरुखमे भेद नहि करैए, सभकेँ 'शरे' कहैए। पढ़ल-लिखल, मूर्ख, देहाती-शहरी, नेता-प्रणेता, नेनासँ बूढ़ सभकेँ 'शरे' कहैए - आउ 'शर' कत' जेबै ? हँ, बेसी काल ओ एकछाहा मैथिली बजैए आ गीतो बेसी मैथिलीएक गबैत रहैए। हमरा तेँ आर

बेसी नीक लगैए क्रैक। ओकरामे एकटा और विशेषता छै जे सवारीक मोटा-चोटा, बोरिया, ब्रीफकेश आ कि कोनो भारी समान अपनेसँ उठा क' रखैए टेम्पोपर आ उतर' कालमे उतारियो दैए, मुदा किराया तँ बेसी ककरोसँ एकोटा पाइ नहि लैए। सेवाक मूल्य ल' सकैत छल से नहि लैत अछि।

क्रैक ठीके क्रैक अछि। अर-दर गबैत खूब रेसमे टेम्पो चलबैत रहैए। अगल-बगलमे जाइत बूढ़ा होथि कि बूढ़ी, एकाएक रोकि बाबा परणाम .... दाइ परणाम तेहेन पोजमे कहि चलि दैए जे बिना हँसने नहि रहल जायत। सभ हँसि दैत छै, जकरा कहलक से पित्ते माहूर भऽ गारि पढ़' लगैए। ओकरा जेना मजा अबैत होइक। कोनो-कोनो टेम्पोचालक पसिन्जरकेँ भड़का दैत छै। कहि देलक हे ओइ टेम्पो पर नै चढ़ू, क्रैक छै, कतहु एक्सिडेंट करा देत ... सब दिन एक्सिडेंट करिते अछि। नाहकमे माथ-कपार फूटि जैत। मुदा ओ अछि जे कोनो परबाहि नै करैए। ककरोसँ कुन्नह नै रखैए, अपन काज पर डटल रहैए ओहिना हँसैत। कखनो मोन छोट नहि करैए।

ओहि दिन हम पान खा क' कालेजसँ डेरा विदा होयबा पर रही। सड़कक कातमे एकटा टेम्पो ठाढ़ देखलियै। नजरि दौड़ौलहुँ तँ देखैत छी जे एकटा डिब्बामे सँ टेम्पोमे तेल ढारि रहल अछि। तेल ढारल भ' गैले । हम एकटा मित्रक संग गप्पक समापन करबा पर रही। डिब्बा गाड़ीमे राखि हमरा ओ कहैए-'शर' यौ ...... शर, जेबै लहेरियासराय? चेला हाजिर अछि। हम सकारात्मक उत्तर द' बैसबाक लेल जहाँ जाइत छी कि ओ क्रैक हमरा संगीकेँ कहैए हए . ... हए ......शरकेँ फँसा लेलियै। हमर मित्रकेँ बतहाक गप्प सुनि हँसी लागि गेलनि, पानोबला हँस' लागल। हम हँसैत टेम्पोपर बैसि गेलहुँ। क्रैक गाड़ी स्टार्ट क' चलि पड़ल।

अएँ हौ, एत' गाड़ी लगौने छलहए ? हम पूछि देलियै।

तेल साफ भ' गेलै 'शर' । एतहि कातमे लगा देलियै, डिब्बा लेलहुँ, पेट्रोल टंकी गेलहुँ , तेल आनि क' खोराकी द', चला परदेशी। शर .....! बिना खाना-खोराकीकेँ मनुक्ख तँ काज कैए ने सकैए, ई तँ गाड़ी छै, आ कि नै शर ?

आह! छैहे की। पेटे लेल तँ दुनिया हरान अछि।

एतेक गप्प होइते अछि कि सड़कक खाधिमे जरकिंग भेल जे मुँहे भरे खस' लगलहुँ, मुदा बाँचि गेलहुँ। एहन कतौ सड़क होइ। सड़क आ खाधिमे घुट्ठा सोहार नै देखने छलहुँ। गुण्डा -आदंकीक संगति भले आदमी संग जकाँ । लुटि लेलकै बिहारकेँ - हमरा बजा गेल।

शर ! सरकारेकँ कतेक दोख देबै ? लाख-करोड़क महल बनौने छै, पानि सड़के पर बहबै छै। हमरा सबहक दिमाग ठीक के करतै ?

हम क्रैकक गप्प सुनि चुप भ' गेलहुँ। कतेक सटीक बात बाजलए।

तावतमे टेम्पो स्टेशन लग आबि गेल। एकटा लफुआ-गुण्डा छौंड़ा छड़पि क' चलितेमे चढ़ि गेलै आ टेम्पोचालकक कातमे बैसि गेलै। करीब दू सय डेग और आगू टेम्पो बढ़ल छल कि एक पूर्णयौवना नायिका हाथ देखोलनि। टेम्पो रोकलक, ओ चढ़ि गेली। तीनसिट्टापर एककात हम दोसरकात ओ महिला। सुरेबगर मुहँक काट-छाँट, गहुमियाँ गोराइ, सोटल पोछल-पाछल बाँहि, बान्हल हाड़-काट, चमचमाइत चकाचक चेहरा, बीस-पच्चीस वर्षीया नायिका, सिन्दूरक आभा सौन्दर्यक महिमा -गरिमाकँ शिखरपर पहुँचवैत, बुझाइत छल जे कृष्णक राधा छितितल लावनि सार इएह तँ ने छल हेतीह ?

ई की ? लफुआ-गुण्डा छौंड़ा जे क्रैकक बगलमे बैसल छल, नीचा उतरि ओहि महिलासँ सटि क' बैसि गेल। ओकर चालि-प्रकृति देखिते युवतीक सौन्दर्य पर मेघक कारी-सियाह टिक्कड़ि आबि क' घेरि लेलकै। हँसैत आकृतिपर आदंक सियाह पसरि गेलनि।

हम छनेमे ई की देखि रहल छी? बुझायल जेना युवतीक आँखि अपन रक्षाक याचना क' रहल अछि। टेम्पोचालकक आँखि लाल भ' गेलै। खिसिआइत बाजल- उतरो यहाँ से - उतरते हो या, नहीं उतरेगा तूँ .. ? कहैत रोकि देलक टेम्पो , बन्द क' देलक।

कोनो प्रभाव नहि। अड़ि क', अकड़ि क' बैसल रहल ओ गुण्डवा। महिलाक ठोरपर फिफड़ी पड़ैत, सहमलि सहटि क' ससरली हमरा दिस। ओहि गुण्डबाक प्रवृत्ति देखि हमरो ठंढायल खूनमे सनसनाहटि होब' लागल छल। नारीक रक्षार्थ ओकर आवरूक सुरक्षाक निमित जानोपर आफद झेल' पड़त तँ ताहिमे कोनो हर्ज नहि। इएह तँ पुण्य काज हैत। से सोचि तद्‌वते अपनाकँ तैयार क' रहल छलहुँ मोने मोन।

तूँ की चाहैत छएँ? भले आदमीक काज होउक तँ तुरत उतरि जो .... नै तँ आइ जे ने से भ' जेतौ।

वैसाख मासक तप्त किरणसँ त्रसित लोक किएक बहरायत ? अनेरोक सुनसान जकाँ। गर्मीसँ आउल-बाउल मोन, घमायल शरीर ताहि परसँ सूर्यक प्रचण्ड धाहीसँ अकच्छ भेल मोन। तखन ई घटना एकटा विचित्र सन स्थिति उत्पन्न क' देलक।

'' नहीं उतरोगे तुम ..... ? दिखा दें क्या होता है लफुआगर्दी का मजा ...... ?

गुण्डबा ओत' सँ उतरि क्रैक चालकक बगलमे बैसि कानमे किछु फुसफुसा क' कहलकै। टेम्पोबला एकेठाम नकारात्मक मूड़ी डोलबैत रहल। ओहिकालमे म्यूजियमक गेटसँ आठ-नौ गोटे बाहर आबि सड़कक कातेमे बतिआय लागल। टेम्पोचालक क्रैकक साहस बढ़लै। तमकि क' बाजल - हम नै जैब, तौँ हमरा गाड़ी परसँ उतरै छएँ की नहि ?

हल्लागुल्ला करोगे तो समझ लेना । टेम्पो सहित तुमको गायब कर देंगे।

तोरा जे करबाक होउक से क' लिहएँ। हम बूझि लेब। अखन तौँ गाड़ीसँ उतरै छएँ की करियौ हल्ला। .... दौड़े जा हौ लोक सभ।

ओ गुम्हरैत चुप्पी सधने भागल मुदा ओकर चुप्पी आ आँखिक मुद्रा चेतौनी द' क' गेल क्रैककेँ ।

टेम्पोचालक क्रैककेँ बुझेलैक जेना बड़का संकटसँ उबरल होय। गाड़ी फेर स्टार्ट केलक आ चलि देलक - लहेरियासराय दिस। हम ओकर बहादुरीक धान्यवाद देब' लगलहुँ त' ओ हमर प्रशंसाकेँ लोकैत कह' लागल-

शर! हम दोसरक माय-बहिनकेँ अपन माय-बहिन नहि बुझबै तँ कतेक काल टिक सकबै? दोसराक इज्जत ल' क' चलबै त' ओकर रक्षामे प्राणे चलि जेतै नै परबाहि नै।

क्रैकक उतर सुनि ओकर दायित्व आ कर्त्तव्य बोधक आगू हम बौना बनल रहलहुँ। अजस्र स्नेह सागर उमड़ि आयल ओकरा प्रति। ओहि महिलाक सुखायल ठोरक लालिमा फरिच्छ होब' लागल छल। ओहो बजली तँ किछु नै मुदा आभारसँ दबलि लागि रहल छली।

टेम्पो बेँता चौक आयल। महिला उतरली, पाइ देलथिन। क्रैक किन्हहुँ आइ पाइ लेबाक लेल तैयार नहि छल। बहुत हमर आग्रह आ महिलाक डबडबायल आँखि पर विवश भ' किराया लेलक। टेम्पोसँ उतरि जाय तँ लगलि किन्तु पलटि-पलटि ताकथि टेम्पोबाला दिस। हमहूँ दस डेग आगू आबि उतरलहुँ । क्रैक भाव विगलित होइत बाजल -

आब नै चलैब टेम्पो। माथा गड़बड़ा गेलै 'शर'। जाबत शान्ति नहि भेटतै तँ हँसब-बाजब की, दू कौर खाओ ने हेतै 'शर' । एते दिन क्रैक छलहुँ नहि, मुदा आब कहीं भ' ने जाइ।

शब्दार्थ

क्रैक	-	बताह , झोंकाह
बतिसी	-	बतीसा दाँत
उकठपना	-	उपद्रव
आमेख-इरखा	-	अन्यथा भाव , दु:ख वा क्रोधक भाव
साधन्स	-	हिम्मति
निर्विकार	-	निश्छल - निर्मल
खाँच-खाँच	-	शरीरमे भेल दाग
गर्दभ स्वर	-	गदहाक स्वर
समदर्शी	-	सभ पर समान दृष्टि रखनिहार
अर-दर	-	अंटसंट
पित्ते माहुर	-	तामसे विष भेल
ऐक्सिडेन्ट	-	दुर्घटना
खाना - खोराकी	-	भोजन
घुट्ठा सोहार	-	घनिष्ठ सम्बन्ध, हेल-मेल
सुरेबगर	-	सुन्दर
आउल-बाउल	-	तंग-तंग, व्याकुल
फरिच्छ	-	साफ

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न -

(i) 'क्रैक' शीर्षक कथाक कथाकार छथि -

(क) उमाकान्त (ख) विभारानी

(ग) अशोक (घ) भाग्यनारायण झा

(ii) उमाकान्तक रचना अछि -

(क) भोजन (ख) क्रैक

(ग) चन्द्रमुखी (घ) पर्यावरण

2. रिक्त स्थानक पूर्त्ति करू -

(i) मानि लिय'जे ओकर .... क्रैक भेल।

(ii) अर-दर गबैत खूब रेसमे .... चलबैत रहैए।

(iii) .... गाड़ी स्टार्ट क' चलि पड़ल।

3. शुद्ध/अशुद्ध पाँतीकेँ चिह्नित करू -

(i) क्रैक हरदम दाँत चियारने बत्तिसी देखबैत रहैए।

(ii) बेसी काल ओ एकछाहा मैथिली बजैए।

(iii) क्रैक टेम्पो नहि चलबैत अछि।

4. लघूत्तरीय प्रश्न -

(i) टेम्पोचालकक नाम की अछि ?

(ii) टेम्पोचालक 'क्रैक' नामसँ जानल जाइत छथि कियैक ?

(iii) क्रैक बेसी काल कोन भाषा बजैए ?

(iv) क्रैक समदर्शी अछि । कोना ?

(v) क्रैक कोना एकटा महिलाक इज्जति बचओलक ?

5. दीर्घोत्तरीय प्रश्न -

(i) 'क्रैक' कथाक सारांश लिखू।

(ii) क्रैक कथाक कथ्य स्पष्ट करू।

(iii) क्रैकक चरित्र चित्रण करू।

(iv) टेम्पो पर सवार महिलाक सौन्दर्यक वर्णन करू।

(v) पठित पाठक आधार पर क्रैक अपन दायित्व आ कर्त्तव्यक पालन कोना कयल ?

6. निम्न पाँतीक सप्रसंग व्याख्या करू :

(i) मुदा ओ अछि जे कोनो परवाहि ने करैए। ककरोसँ कुन्नह नै रखैए, अपन काज पर डटल रहैए, ओहिना हँसैत। कखनो मोन छोट नहि करैए।

(ii) सुरेबगर मुँहक काट-छाँट , गहुमियाँ गोराइ , सोटल पोछल-पाछल बाँहि, बान्हल हाड़-काट, चमचमाइत चकाचक चेहरा , बीस-पचीस वर्षीया नायिका, सिन्दूरक आभा सौन्दर्यक महिमा-गरिमाके ँ शिखर पर पहुँचबैत , बुझाइल छल जे कृष्णक राधा छितितल लावनि सार इएह तँ ने छल हेतीह'?

गतिविधि :

(i) **पाठमे प्रयुक्त निम्न शब्दक अर्थ लिखू :**
परिच्छ, गुम्हरैत, बत्तीसी, पित्ते माहुर, खोराकी

(ii) एहि कथाक सार्थकता पर विचार करू।

(iii) **निम्नलिखित मुहावराक अर्थ स्पष्ट करैत वाक्यमे प्रयोग करू :**
बहत्तरि हाथक अँतरी , पित्ते माहुर, डबडबायल आँखि

निर्देश -

(i) शहरमे आर्थिक दृष्टिएँ टेम्पोए सभसँ पैघ साधन अयबा-जयबा लेल अछि-आन-आन साधनक चर्चासँ शिक्षक छात्रकेँ आवागमनक स्थितिसँ अवगत कराबथि।

(ii) क्रैक जकाँ निर्विकार -निश्चल भावसँ अपन कर्त्तव्य समाजमे सब गोटे करथि। समाज सेवाक भावनाक चर्चा शिक्षक छात्रक बीच करथि।